

PRESIDENTIAL ADDRESS

पर्वतीय क्षेत्रों की हाइड्रोलोजी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

श्री किशोरी लाल जी, उद्योग मन्त्री, हिमाचल प्रदेश द्वारा अध्यक्षीय भाषण

माननीय श्री विद्याचरण शुक्ला जी, जल संसाधन मन्त्री, भारत सरकार एवं देश-विदेश के विभिन्न हिस्सों से पधारे प्रतिनिधिगण ।

मुझे अपने आप को, शिमला की इस सुहावनी सुबह में, आपके बीच पाकर हर्ष और गौरव महसूस हो रहा है । मैं इस संगोष्ठी के संयोजकों को जिन्होंने मुझे आपसे मेरे विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया, इस कार्य के लिए धन्यवाद देता हूँ ।

पर्वतीय क्षेत्रों की हाइड्रोलोजी पर आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के महत्व का इसी बात से पता लगता है कि माननीय शुक्ला जी ने अपनी व्यस्तता के बावजूद इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बनने का कार्यभार संभाला । मैं श्री शुक्ला जी, अपने विदेशी मेहमानों और अन्य प्रतिनिधि गणों का शिमला में स्वागत करता हूँ ।

हाइड्रोलोजी यानी जलविज्ञान पृथ्वी पर हाइड्रोलोजिकल साइकल के सभी विषयों से सम्बन्धित विज्ञान है । पिछले कुछ दशकों से आर्थिक विकास में जलविज्ञान की अधिक भूमिका के कारण इस विज्ञान का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है । वैसे भी पानी जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के जीवन के लिए अपरिहार्य है । दुनिया की जनसंख्या दिनों-दिन बहुत अधिक बढ़ रही है, लेकिन पृथ्वी पर वर्षा और ताजा पानी के स्रोत लगभग उतने ही हैं । बढ़ती हुई पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए, वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों को उपलब्ध पानी का अनुकूलतम प्रयोग करने के तरीके ढूढने होंगे ।

पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल में से 97% समुद्रों में नमकीन पानी के रूप में है और केवल 3% जल पृथ्वी पर ताजे पानी के रूप में उपलब्ध है । ताजा जल का केवल 0.03% भाग ही नदियों में पाया जाता है । दुनिया की बहुत सी नदियों में साल के दौरान पानी की मात्रा में उतार चढ़ाव अधिक नहीं है लेकिन भारत की अधिकतर नदियों में 75% के लगभग पानी मानसून के चार महीनों में बहता है । पानी के इस वार्षिक असमान वितरण को देखते हुए इस देश में हाइड्रोलोजी का महत्व काफी अधिक हो जाता है ।

पृथ्वी पर ध्रुव क्षेत्र को छोड़कर, हिमालय पर्वत के हिमखण्डों में, बर्फ के सबसे बड़े भण्डार हैं । यह दुनिया का महानतम पर्वत है । यह वैज्ञानिकों को विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य करने का अत्याधिक अवसर प्रदान करता है । हिमालय और इसकी श्रृंखलाएं दुनिया के सात देशों यानी रूस, चीन, भारत, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान और अफगानिस्तान में स्थित

हैं । देश के उत्तरी भागों में हिमालय पर्वत का काफी क्षेत्रफल है । सदियों से हिमालय देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा और आर्थिक स्थिति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।

हिमालय और इसकी श्रृंखलाओं की जल विज्ञान प्रणाली का वर्तमान ज्ञान स्तर संतोषजनक नहीं है । इस देश में काफी हद तक बर्फ और हिमखण्डों के पिघलने के हाइड्रोलोजिकल व्यवहार का समन्वेष नहीं हुआ है । हिमालय से निकलने वाली नदियों में पानी की सही मात्रा तथा बर्फ और हिमखण्डों से पिघलने वाले जल की मात्रा का विश्वसनीय अनुमान कार्यकुशल योजना बनाने, जल संसाधनों के प्रबन्ध, प्राकृतिक संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग, हाइड्रोलिक स्ट्रक्चरल के अभिकल्प, जलाशय प्रचालन और बाढ़ नियंत्रण इत्यादि कार्यों के लिए अति आवश्यक है । इन नदियों में पानी की मात्रा का सही पता लगाने के लिए इनके हाइड्रोमेटियोरोलोजिकल (Hydrometeorological) मापदण्डों, हाइड्रोलोजिकल व्यवहार और जलग्रह क्षेत्र के लक्षणों के बारे में ज्ञान अति महत्वपूर्ण है।

अधिकांश प्रगतिशील देशों में नदी घाटी परियोजनाओं का बिजली, सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण को ध्यान में रखते हुए बहुत अधिक महत्व हो गया है । दिनों दिन बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण कहीं भी पानी बहुतायत मात्रा में नहीं रहा है । प्राकृतिक संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग के लिए तीक्ष्ण निर्णय लेने की आवश्यकता है । परियोजनाओं की योजना बनाने का कार्य भी काफी जटिल हो चुका है । वास्तव में, परियोजनाओं की अनुकूलतम योजना बनाने में हाइड्रोलोजी के सही अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है ।

आजकल पर्यावरण के नाम पर लगभग सभी विकास कार्यों में रुकावटें डाली जा रही हैं । पर्यावरण के नाम पर विकास के हर कार्य को बन्द कर देना भी उचित नहीं है। इसलिए विकास कार्यक्रमों और पर्यावरण में एक सही सन्तुलन होना चाहिए । विकास कार्यक्रमों का पर्यावरण पर असर, दुष्प्रभाव, संरक्षण और उपचार का कार्य विशेषज्ञों और प्रभावित लोगों तक ही सीमित रहना चाहिए । वर्तमान में यह देखा गया है कि कुछ व्यक्ति विशेष जिनका इन कार्यों से कोई सम्बन्ध नहीं है, अपने निजी स्वार्थों के लिए पर्यावरण के नाम को प्रयोग में ला रहे हैं और इस तरह विकास कार्यों में बाधा डाल रहे हैं । हम सभी को इस तरह की प्रवृत्ति पर रोक लगाने की आवश्यकता है ।

हिमाचल प्रदेश, भारतीय गणराज्य का एक उत्तरी प्रान्त है । यह प्रदेश अठखेलियां करती सुनहरी व नीली नदियों, गगनचुम्बी पर्वत चोटियों और हिमाच्छादित चोटियों से युक्त भू-प्रदेश है । यह प्रकृति की अनुपम उदारता से भरपूर है । इसमें जल विद्युत के विस्तृत संसाधन उपलब्ध हैं । इस प्रदेश के बीचों बीच पाँच मुख्य नदियां - यमुना, सतलुज, ब्यास, रावी और चिनाव तथा इनकी सहायक नदियां बहती हैं, जिनका उद्गम हिमालय या इसकी बर्फ से ढकी श्रृंखलाओं से होता है । यह नदियां काफी टेढ़े-मेढ़े रास्तों से बहती हैं और पूरा वर्ष इनमें काफी अधिक मात्रा में जल उपलब्ध रहता है । इन नदियों में नदी तल

का ढलान बहुत अधिक है जिसमें यह जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण के लिए एक आदर्श स्थिति संभरण करती है । हाइड्रोलोजिकल, स्थलाकृतिय और प्राथमिक स्थल सर्वेक्षण के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि हिमाचल प्रदेश में 20,000 मेगावाट विद्युत क्षमता के अपार भंडार हैं, जो कि देश में उपलब्ध कुल क्षमता का लगभग 20 प्रतिशत है । इस अपार क्षमता को मानवता के उत्थान में सही उपयोग में लाने के लिए पर्वतीय क्षेत्रों की हाइड्रोलोजी का सबसे अधिक महत्व है ।

यह देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इस सैमिनार के माध्यम से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पर्वतीय क्षेत्र की हाइड्रोलोजी से सम्बन्धित विशेषज्ञ इकट्ठे हुए हैं । इससे दुनिया के पर्वतीय क्षेत्रों की समस्याओं का उपयुक्त हल ढूंढने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान हुआ है । मुझे पूर्ण आशा है कि सैमिनार में चर्चा इस देश में उपलब्ध जल संसाधनों के अनूकूलतम उपयोग के लिए बहुत अधिक सहायक सिद्ध होगी और इससे मानवता को सुख, समृद्धी और खुशी मिल सकेगी।

मुझे बहुत खुशी है कि यह सैमिनार हिमाचल प्रदेश के अत्यन्त रमणीय और सुन्दर हिल स्टेशन, शिमला में आयोजित हो रहा है ।

मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय सैमिनार की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ ।

जय हिन्द !